3

ANSWER BOOK

केवल मूल्यांकनकर्ता के उपयोग हेतु!

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

32 पृष्ठी

विषय Subject : Hindi

विषय कोड Subject Code : 051

परीक्षा की दिनांक / Date of Exam : 02-03-23

उत्तर देने का माध्यम Medium of answering the paper : English

प्रश्न पत्र का सेट Set of the Question paper : B

गोले भरने हेतु उदाहरण :–
सही तरीका :–
गलत तरीका :–

नोट :– इस शीट को भरने के पूर्व इस पृष्ठ के पीछे दिए गए उदाहरण को देखें।

ID NO. 6614041
SUB. 051 - HINDI
Bag. 60511195
pk 5

केवल परीक्षक द्वारा भरा जावे।
प्रश्न क्रमांक के सम्मुख प्राप्तांकों की प्रविष्टी करें।

प्रश्न क्रमांक	पृष्ठ क्रमांक	प्राप्तांक (अंकों में)
1		
2		
3		
4		
5		
6		
7		
8		
9		
10		
11		
12		
13		
14		
15		
16		
17		
18		
19		
20		
21		
22		
23		
24		
25		
26		
27		
28		

... शब्दों में : कुल प्राप्तांक अंकों में

www.oddyindia.com

CHANDRA MOHAN RAI (UMS)
V.No.6223007

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जा...

प्रमाणित किया जाता है कि अन्दर के पृष्ठों के अनुरूप मुख्य पृष्ठ पर अंकों की प्रविष्टी एवं अंकों का योग सही है।

निर्धारित मुद्रा : नाम, पदनाम, मोबाईल नम्बर, परीक्षक क्रमांक एवं पदांकित संस्था के नाम की मुद्रा लगाएं।

उप मुख्य परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा	परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा
रमेश कुमार नामदेव उ. मा. शिक्षक शा. बा. उ. मा. वि. शमशाबाद V.No.6223098	भगवान सिंह जाटव उ.मा. शि. MLB विदिशा पंजीयन क्र6223023

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. → 01

सही विकल्प का चयन :-

उत्तर

(i) (अ) दत्ता जी राव के यहाँ
(ii) (ब) नाभिक
(iii) (स) शब्दालंकार
(iv) (अ) चारों कालों में
(v) (द) कपड़े पहनाती है
(vi) (स) पैसे की

B E

प्रश्न क्र → 02

रिक्त स्थानों के उत्तर

(i) लेखक
(ii) नौ वर्ष की उम्र
(iii) भूषण
(iv) कागज के पन्ने से
(v) बिड़ला मन्दिर
(vi) सरल वाक्य
मात्रिक

प्रश्न क्र. → 03

सही जोड़ी बनाइए :-

BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL

प्रश्न क्र.

(i) मस्ती का संदेश :- हरिवंश राय बच्चन
(ii) चौपाई छन्द :- 16 मात्राएँ
(iii) चित्रकार :- चितेरा
(iv) सम्पादकीय पृष्ठ :- अखबार की अपनी आवाज
(v) हिन्दी साहित्य का स्वर्ण युग :- भक्तिकाल
(vi) छायावाद के प्रवर्तक कवि :- जय शंकर प्रसाद

प्रश्न क्र. → 04

एक शब्द / एक वाक्य में उत्तर

उत्तर

(i) पहलवान की ढ़ोलक की आवाज
(ii) जय शंकर प्रसाद
(iii) लाल खड़िया चाक
(iv) दोहा छन्द का अंश
(v) मुहावरा
(vi) ध्वनि या संवाद से
(vii) खजूर और अंगूर

प्रश्न क्र. → 05

सत्य / असत्य के उत्तर

(i) सत्य
(ii) सत्य
(iii) असत्य

BSE

प्रश्न क्र.

(iv) सत्य

(v) सत्य

(vi) असत्य

प्रश्न क्र. → (06) (अथवा)

लक्षणा शब्द शक्ति :- जिस शब्द शक्ति से शब्द के प्रचलित अर्थ या मुख्य अर्थ का बोध न होकर अन्य अर्थ का बोध होता है उसे लक्षणा शब्द शक्ति कहते हैं।

उदा. :- (i) मोहन गधा है।

(ii) शेर वनराज कहलाता है।

(iii) बुन्देले हर बोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी।

(iv) राम शेर है।

प्रश्न क्र. → (07) (अथवा)

राष्ट्रभाषा की विशेषता :- राष्ट्रभाषा की निम्नलि. विशेषताएँ हैं :-

(i) राष्ट्रभाषा देश में बहुसंख्यक लोगों की भाषा होती है। यह सीखने में सरल व लिपि वैज्ञानिक होती है।

BSE

ST-16A4

मध्यप्रदेश
BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH

प्र. क्र.

(ii) राष्ट्रभाषा संविधान द्वारा मान्यता प्राप्त होती है। यह उस राष्ट्र का गौरव होती है।

(iii) राष्ट्रभाषा के लिए संपर्क भाषा नाम भी उचित है।

(iv) यह अखबार, टी.वी. और शिक्षा का माध्यम होती है।

प्रश्न क्र. → (08)

वाक्यों को शुद्ध कीजिए :-

(i) मोहन पुस्तक पढ़ रहा है।

(ii) जंगल में शेर दहाड़ने लगा।

प्रश्न क्र. → (09) का उत्तर

कवि ने अपने खेत मे कौनसा बीज बोया था ?

उ. :- कवि ने अपने खेत मे शब्द रूपी बीज बोया था। कवि कहता है कि उसने अपने विचार मे चली ~~अंधी~~ आँधी मे आए शब्द को कागज रूपी खेत में बोया है जिससे एक नयी रचना का सृजन किया जा सकता है। वह आगे कहता है कि इस शब्द रूपी बीज के

[redacted]

प्रश्न क्र.

अंकुर फूट गए हैं मैंने अपनी कल्पनाओं से इसे रसायन किया है जिससे अब यह बीज एक फसल का निर्माण करेगा अर्थात एक कविता का सृजन करेगा।

प्रश्न क्र. → (10) (अथवा)

लक्ष्मण जी के लिए .... थे ?

उ. :-

लक्ष्मण जी के लिए संजीवनी बूटी लाने के लिए "हनुमान जी" गये थे। जब मेघनाद की अमोघ नामक शक्ति बाण से लक्ष्मण जी मूर्छित हो जाते हैं तब चारों ओर शोक व विलाप का वातावरण फैल जाता है। प्रभु श्री राम अपने लक्ष्मण के विरह के मोह में फँस जाते हैं व शोक व विलाप करने लगते हैं। तब हनुमान जी लंका से सुषेन वैद्य को लाते हैं तथा वैद्य द्वारा बताए जाने पर संजीवनी बूटी लाने के लिए जाते हैं। मार्ग में आई सभी बाधाओं को पार कर वे संजीवनी बूटी का पूरा पर्वत उठा लाते हैं व लक्ष्मण के प्राणों की रक्षा करते हैं, अतः इस प्रकार

BSE

BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL

प्रश्न क्र.

संजीवनी बूटी लाने के लिए पवनपुत्र की संकट मोचन हनुमान जी जाते हैं।

प्रश्न क्र. → (11) का उत्तर

जेब के भरे होने .... होती है ?

उ.:- जेब के भरे होने पर और मन के खाली होने पर मन बाजार के बाजारूपन की ओर खींचा चला जाता है। यह मन व्यक्ति को वह वस्तु लेने पर भी विवश कर देता है जिसकी उसे आवश्यकता तक नहीं होती। वह हर वो सामान व वस्तु खरीदने लगता है जिसकी उसे जरूरत तक नहीं होती। इस प्रकार जेब भरे होने पर मन बाजारूपन में ही लीन हो जाता है। वह बाजार के जादू पर ही चलने लगता है तथा समय और पैसा दोनों का ही दुरुपयोग कर उन्हें नष्ट करता है।

प्रश्न क्र. → (12) (अथवा)

महादेवी वर्मा ने स्वयं व .... नकारा है।

उ.:- महादेवी वर्मा ने स्वयं व भक्तिन के

प्रश्न क्र.

मह्य दासी और मालकिन के रिश्ते का सम्बन्ध को प्रकाश है। वर्मा कहती है कि मेरा और भक्तिन का तो जन्मो जन्मान्तर का सम्बन्ध है जो कभी भी टूट नहीं सकता भक्तिन सेवा भाव मे मेरे लिए (महादेवी वर्मा) के हनुमान जी से कम नहीं है जिन्होंने अपने प्रभु श्री राम की हर आज्ञा को अपने जीवन का एकमात्र लक्ष्य बनाया था उसी प्रकार भक्तिन और मेरा रिश्ता भी है। भक्तिन कभी भी अपनी महादेवी को दुखी नहीं देख सकती। वह सदैव ही मेरा हित चाहती है।

प्रश्न क्र. → 13 का उत्तर

लेखक के पिता ... शर्त रखी?

उ.:- लेखक के पिता पर दत्ता जी राव के दबाव डालने पर आनन्द के पिता उसे पाठशाला भेजने के लिए तैयार हो जाते हैं, परन्तु वह हृदय से नहीं चाहते थे कि आनन्द पाठ शाला जाए। वे चाहते थे कि आनन्द उनके साथ खेतों में काम करे व भैंसो को

9

चराए। इसीलिए उन्होंने आनन्द (लेखक) के सामने नि. लि. शर्तें रखी :-

(i) दिन निकलते ही खेत पर जाना होगा व खेत में पानी देना होगा।

(ii) ग्यारह बजे खेत से ही पाठशाला जाना होगा।

(iii) पाठशाला से लौटते ही बस्ता घर रखकर खेत में घण्टे भर भैंस चराना होगा व खेत की रखवाली करनी होगी।

कभी खेत में ज्यादा कार्य होने पर पाठशाला से गैर हाजिरी लगवाना होगा।

प्रश्न क्र. → (14) (अथवा)

फिल्म और रंग मंच ----- जाता है

फिल्म और रंग मंच पर दृश्यों को पात्रों संवाद के मेरुदंड होने के माध्यम से प्रभाव शील बनाया जाता है। रंग मंच पर जितने सटीक व सरल पात्र मौजूद होंगे उतना ही देखने वाले को अच्छा लगेगा। उन पात्रों में नेचुरल एक्टर करने की शक्ति होनी चाहिए व ज्यादा दिखावा नहीं करना चाहिए। उसी प्रकार एक अच्छी संवाद (विषय) भी

EDUCATION MADHYAPRADESH BHOPAL BOARDOFSECONDARYEDUCATION MADHYAP ... BOARDOFSECONDARYEDUCATION MADHYAPRADESH BHOPAL

प्रश्न क्र.

दर्शक के हृदय की उत्तेजना वृत्ति को जाग्रत कर देता है व उसमे पूरी तरह डूब जाता है। इस प्रकार पात्रों व संवाद की मदद से फिल्म व रंग मंच के दृश्यों को प्रभाव शील बनाया जाता है।

प्रश्न क्र. → 15 का उत्तर

वीर रस :- सहृदय के हृदय मे जब उत्साह नामक स्थायी भाव का विभाव, अनुभाव व संचारी भाव के साथ संयोग होता है तब वहाँ वीर रस विद्यमान होता है।

उदा० :- (i) बुन्देले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी
खूब लड़ी मर्दानी, वह तो झाँसी वाली रानी थी॥

(ii) उठो जवानों हम भारत के स्वाभिमान सरताज हैं।
अभिमन्यु के रथ का पहिया, चक्रव्यूह की मार हैं।

प्रश्न क्र. → 16 का उत्तर

B S E

MADHYAPRADESH BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYAPRADESH BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION

जननी और जन्मभूमि स्वर्ग से महान है

* जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसि * अर्थात जननी और जन्म भूमि दोनों ही स्वर्ग की खुशहाल व सुख-सुविधा पूर्ण दुनिया से अधिक श्रेष्ठ व पूजनीय है। जननी अर्थात "माँ" और जन्मभूमि अर्थात "जहाँ हमारा जन्म हुआ (भारतमाता) दोनों ही पूज्यनीय है। जहाँ एक ओर माँ अपने बच्चे को नौ महीने अपनी कोख मे पालती है व अनेक कष्टों का सामना कर बच्चे को जन्म देती है वैसी प्रकार भारत माता जन्म से लेकर मृत्यु तक पालती है व उसका भरण पोषण करती है। वह सदैव अपनी बच्चों को सीने से लगाए रखती है। इस प्रकार जननी और जन्म भूमि दोनों ही एक व्यक्ति का उद्गम स्थान व अन्त है इन्ही से जुड़ा एक कटु सत्य है। इसीलिए माँ और भारत माता दोनों ही स्वर्ग की अलौकिक सुख-सुविधाओं कई ऊँचे स्थान पर विद्यमान है। हमें हमारी जननी व जन्म भूमि का सदैव आदर करना चाहि व इनके प्रति अपनी कर्तव्य निष्ठा बनाए रखना चाहिए।

BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. → 17 का उत्तर

(अथवा)

गद्यांश के उत्तर

(क) गद्यांश का उचित शीर्षक "हास्य - व्यंग्य" है।

(ख) नीरस जीवन को हास्य - व्यंग्य माध्यम सुखद बना देता है।

(ग) गद्यांश का उचित सार कि हास्य - व्यंग्य एक ऐसा माध्यम है जो नीरस जीवन को भी सुखद बना देता है। यह संघर्ष, तनाव, घुटन आदि को मुसीबत नहीं बनने देता अर्थात हँसने से इन सभी से मुक्ति पाई जा सकती है।

प्रश्न क्र. → 18 का उत्तर

कवि परिचय

BSE

: हरिवंश राय बच्चन :

जन्म :- 1907 में , इलाहाबाद
मृत्यु :- 2003 में , मुम्बई

दो रचनाएँ :- काव्य संग्रह → मधुबाला, मधुशाला, मधुकलश, निशा निमन्त्रण
आत्मकथा → क्या भूलूँ क्या याद करूँ
अनुवाद → हैमलेट , जन गीता
डायरी → प्रवासी की डायरी

भाव पक्ष :- (1) हालावादी दर्शन
(2) रहस्यवादी भावना
(3) प्रेम और सौन्दर्य
(4) सामाजिक चेतना
(5) मानवता वादी दृष्टिकोण

हालावादी दर्शन :- हरिवंश राय बच्चन जी हालावाद के प्रवर्तक कवि थे। इनकी रचनाओं में हालावादी दर्शन अवश्य ही देखने को मिलता है। इनका मानना था कि जीवन मधुशाला है, जिसे प्याले में डालकर पाठक को पिलाया जाता है। कविता का एक घूँट जीवन का एक घूँट है। वे कहते है कि सुख - दुख को समान से मानने पर सभी झगड़े काफूर हो जाएंगे व इश्क का

BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH, BHOPAL

प्रश्न क्र.

मजा आने लगेगा।

कलापक्ष :- (i) भाषा शैली
(ii) बिम्ब योजना
(iii) अलंकार योजना
(iv)

भाषा :- बच्चन जी की भाषा शुद्ध साहित्यिक खड़ी बोली है। जिसमें माधुर्य व ओज गुण (?) विद्यमान है, इसके अतिरिक्त आपने तत्सम शब्दावली, अंग्रेजी, उर्दू, फारसी आदि शब्दों का प्रयोग भी किया है।

B
S
E

शैली :- आपने अपने काव्य में प्राय: प्रांजल शैली का प्रयोग किया है। जिसके कारण काव्य मे एक रसात्मक लहर छाई है। आपने मन मौजी अंदाज मे काव्य रचना की है।

(iii) साहित्य में स्थान :- बच्चन जी हालावाद के प्रवर्तक कवि है। अपने काव्य में रस व मन मौजी पन का उपयोग कर आपने काव्य को रस पूर्ण व सहज व सरस बनाया है। आपने काव्य मे

दीवानगी व प्रेम - सौन्दर्य का गान किया है। हरिवंश राय बच्चन जी का साहित्य मे अद्वितीय स्थान है जो सदैव अविस्मरणीय रहेगा। आप जैसे रचनाकार सदैव जन्मो जन्मान्तर इस धरा पर जन्म लेते है।

प्रश्न क्र. → 19 का उत्तर

लेखक परिचय (अथवा)

:- धर्मवीर भारती :-

(i) दो रचनाएँ :- सूरज का सातवा घोड़ा,
कविताएँ → अन्धायुग, कनुप्रिया
प्रकाशन → धर्म युग
अन्य → ठण्डा लोहा, गुनाहो का देवता

(ii) भाषा :- धर्म वीर भारती जी की भाषा सरल, सुबोध व सरस रही, इनकी कृतियों मे मानो सजीवता सी जान पड़ती है। आपने क्लिष्ट व दुरूह विषय को भी अपनी सरल व सरस लेखन शैली से सजीव व मन मोहक बनाया है। आपकी भाषा में किसी वस्तु का सजीव व सम्यक चित्रण तत्व

[redacted]

BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL

प्रश्न क्र.

होता है जो जन जीवन को प्रभावित करता है।

शैली :- धर्मवीर भारती जी ने कई शैलियों का प्रयोग किया है :-
(i) वर्णात्मक शैली
(ii) विवेचात्मक शैली
(iii) भावात्मक शैली
(iv) वैज्ञानिक शैली
(v) चित्रात्मक शैली

वर्णात्मक शैली :- भारती जी ने अपनी रचनाओं को अधिक सरल व सहज बनाने के लिए वर्णात्मक शैली का प्रयोग किया है। इन्होंने प्रत्येक विषय का सार गर्भित लेखन कार्य किया है।

भावात्मक शैली :- आपने अपनी कृतियों मुख्यत: भावों को अवश्य रूप से ध्यान रखा है जिस कारण जन जीवन को प्रेरित किया जा सकता है

(iii) साहित्य में स्थान :- धर्मवीर भारती एक सहज व सरल किन्तु सजीव रचनाकार के रूप

B
S
E

[redacted]

में सदैव विद्यमान रहेंगे। आपने धर्मयुग नाम के प्रकाशन से जन जीवन को प्रभावित किया है। भारती जी ने सदैव ही सामाजिक चेतना का संचार अपने काव्य द्वारा करना चाहा। आपका साहित्य में यह योगदान सदैव स्मरणीय रखा जाएगा। आप सदैव साहित्य में एक तारे की भाँति चमकते रहेंगे।

प्रश्न क्र.- (22)

सबसे तेज ... ... झुंड को।

संदर्भ :- प्रस्तुत पद्य पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक आरोह भाग 2 में संकलित पाठ - "पतंग" से ली गई है। इसके कवि तो आलोक धन्वा जी हैं।

प्रसंग :- प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने शरद ऋतु के आगमन को दर्शाया है व प्रकृति में होने वाले परिवर्तनों पर प्रकाश डालना चाहा है।

EDUCATION MADHYAPRADESH BHOPAL BOARDOFSECONDARYEDUCATION MADHYAPRADESH BHOPAL BOARDOFSECONDARYEDUCATION MADHYAPRADESH BHOPAL

प्रश्न क्र.

BSE

व्याख्या : प्रस्तुत पद्य में कवि कहते हैं कि तेज बौछारों वाला भादो अर्थात् बारिश का महीना भादो अब खत्म हो गया है। सवेरा हो चुका है अब शरद ऋतु के आगमन हो गया है। शरद ऋतु के आगमन से अनेक परिवर्तन वातावरण में देखने को मिल रहे हैं। कवि कहते हैं कि सूर्य खरगोश की आँखों समान लाल दिखाई पड़ रहा है यानी शरद ऋतु आ गई है। कवि आगे कहते हैं कि ऐसा लग रहा है मानो किसी साइकिल पर बैठकर शरद ऋतु पुलों को तेजी से पार कर आगमन कर रही व बार-बार साइकिल की घंटी बजाकर शरद के आगमन का संदेश दे रही है। शरद ऋतु बार-बार घंटी बजाकर इशारा कर रही कि सभी बच्चे जल्दी-जल्दी घरों से बाहर आओ अब पतंग उड़ाने का समय हो गया है अर्थात् बच्चों के पतंग उड़ाने के लिए पुकार रही है। इस प्रकार वातावरण में परिवर्तन आ गया है।

काव्य सौन्दर्य :- (i) शरद ऋतु का आगमन ।
(ii) खुशहाली का वातावरण ।
(iii) उपमानों का प्रयोग ।
(iv) अनुप्रास अलंकार का प्रयोग ।

प्रश्न क्र. → (23)

एक बार .... देखी ।

संदर्भ :- प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक आरोह भाग 2 से संकलित पाठ 'पहलवान की ढोलक' से लिया गया है। इसके लेखक 'श्री फणीश्वर नाथ रेणु जी' हैं।

प्रसंग :- प्रस्तुत गद्यांश में लेखक ने लुट्टन पहलवान की यौवन व जोशीले पन का वर्णन किया है।

व्याख्या :- लेखक श्री फणीश्वर नाथ रेणु जी कहते हैं कि एक बार की बात है कि लुट्टन पहलवान दंगल देखने के लिए श्याम नगर गया। श्याम नगर के राजा वृद्ध थे परन्तु उन्हें पहलवानी का बड़ा शौक था वे दंगल स्पर्धा कराया करते थे। लुट्टन जब दंगल देखने गया तो वहाँ शेर का बच्चा (चाँद सिंह)

प्रश्न क्र.

सभी पहलवानों को कुश्ती में हरा रहा था, बाकी पहलवानों के दाँव - पेंच देखकर लुट्टन से रहा न गया। वह अपने यौवन व जोशीले पन में मस्ती में और ढोल की ललकार सुन कर अखाड़े में कूद गया, उसका हृदय मानो ढोल की ललकार से ओज गुण से परिपूर्ण हो चुका था। वह दंगल लड़ने के लिए तैयार हो जाता है व अपने सामने खड़े अति बलशाली शेर का बच्चा अर्थात चाँद सिंह जो श्याम नगर का सबसे खतरनाक व अजेय पहलवान था उसे चुनौती दे देता है। इस प्रकार लुट्टन सिंह जोश में आकर चाँद सिंह को दंगल के लिए ललकारता है व बुद्धि और विवेक से दंगल जीत जाता है।

काव्य सौन्दर्य :- (i) ओज गुण की प्रधानता। (ii) अनुप्रास का प्रयोग। (iii) जवानी का जोश व मस्ती का वर्णन। (iv) सरल व सहज भाषा का प्रयोग।

प्रश्न क्र. → 20 का उत्तर

प्रार्थना पत्र :-

(21)

(20)

प्रति,
जिलाधीश महोदय जी,
जिला :- नर्मदापुरम (म.प्र.)

विषय :- ध्वनि विस्तारक यंत्रों पर प्रतिबन्ध लाने हेतु प्रार्थना पत्र।

महोदय जी,

सविनय निवेदन है कि मैं आपके जिले के एक विद्यालय में पढ़ने वाला छात्र हूँ। मैं आपका ध्यान परीक्षा की ओर करते हुए निवेदन करता हूँ कि जैसा कि आप जानते कि प्रदेश में बोर्ड परीक्षायें प्रारम्भ हो गयी है। सभी विद्यार्थी अपनी पढ़ाई में व्यस्त है परन्तु कुछ लोग इस समय ध्वनि विस्तारक यंत्रों का प्रयोग देर रात तक कर रहे हैं जिससे अध्ययन में मुश्किल हो रही है। अतः आपसे अनुरोध है कि आप परीक्षा काल में ध्वनि विस्तारक यन्त्रों पर प्रतिबन्ध लगाने की कृपा करें। सभी विद्यार्थी आपके ऋणी रहेंगे।

सधन्यवाद!

भवदीय
नाम :- अ, ब, स
कक्षा :- बारहवी
स्थान :- नर्मदापुरम

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. → 21 का उत्तर

:- विद्यार्थी और अनुशासन :-

रूप रेखा :-

(i) प्रस्तावना
(ii) अनुशासन का अर्थ
(iii) विद्यार्थी और अनुशासन
(iv) अनुशासन का महत्व
(v) अनुशासन से लाभ
(vi) अनुशासन हीनता एक अभिशाप
(vii) उपसंहार

B
S
E

प्रस्तावना :- मानव जीवन में अनुशासन की बहुत अधिक महत्वता है। बिना अनुशासन के मनुष्य पशु के समान ~~माना~~ माना जाता है। अनुशासन ही मनुष्य का सबसे श्रेष्ठ मित्र है। मनुष्य का चरित्र उसके अनुशासन से पता किया जा सकता है।

अनुशासन का अर्थ :- अनुशासन शब्द का शाब्दिक अर्थ है : 'एक बन्धन में बंध जाना' अर्थात अपने जीवन को एक नियमित तरीके से

BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL

जीना ही सच्चा अनुशासन। एक अनुशासित मनुष्य सदैव हर क्षेत्र में अपनी पहचान बनाने में सफल होता है

विद्यार्थी और अनुशासन : विद्यार्थी जीवन में अनुशासन का विशेष महत्व है। बिना अनुशासन वाला विद्यार्थी सदैव अपमान का पात्र बनता है। विद्यालय में विद्यार्थी को हर अनुशासन का प्रयोग करना चाहिए। अनुशासित रहना वाला विद्यार्थी ही सफलता प्राप्त कर पाता है।

अनुशासन का महत्व :- मानव जीवन में अनुशासन का बहुत महत्व माना जाता है। बिना अनुशासन का मानव पशु की श्रेणी में आता है। वह उसी प्रकार तिरस्कृत किया जाता है जिस प्रकार चाय में गिरी मक्खी के कारण चाय का तिरस्कार किया जाता है। अनुशासित मानव सदैव सफलता प्राप्त करता है। वह हर क्षेत्र में अपना नाम बना लेते हैं।

अनुशासन से लाभ :- अनुशासन के अनेकों लाभ हैं। जिसमें सबसे पहले तो अनुशासित मानव को

प्रश्न क्र.

लोग सदैव आदर व सम्मान की नजरों से देखते हैं, अनुशासित मनुष्य सदैव हर कार्य समय पर पूर्ण कर लेता है जिससे उसका समय भी बचता है व सफलता का भी मौका बनता है। इत्यादि अनुशासन से बहुत से लाभ होते हैं।

B
S
E

अनुशासन हीनता एक अभिशाप :- अनुशासन हीनता मानव जीवन में एक अभिशाप के समान होती है जो मनुष्य को किसी भी क्षेत्र में आगे नहीं बढ़ने देती अनुशासन हीन मनुष्य सदैव अपमान व घृणा का पात्र बनता है। अनुशासन हीनता से बने बनाए कार्य भी बिगड़ जाते हैं। अनुशासन हीनता के कई दुष्परिणाम होते हैं जो मानव की उन्नति में बाधक होते हैं।

उपसंहार :- अनुशासन मानव जीवन का एक गहना है जो मनुष्य की उन्नति में कार्य करता है। प्रत्येक क्षेत्र में एक अनुशासन होता है जिसका हमें पालन

करना चाहिए। अनुशासन तो मनुष्य को ~~मा~~ मानवतावादी बनाता है व प्रेम भाव और भाई चारे से रहना सिखाता है। अतः हमें सदैव अनुशासन का पालन करना चाहिए। और हमारे आस पास के व्यक्तियों को भी अनुशासन से जीने की सीख देनी चाहिए।

* काक चेष्टे, बको ध्यानं,
श्वान निद्रस्तैव च
अल्पहारी गृहत्यागी
विद्यार्थी पञ्च लक्षणम् ॥

—— ॥ —— ॥ ——